प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

जीवन के लिए सम्यक मार्ग का चयन करें : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 14 जून, 2010

आचार्यश्री महाश्रमण ने स्थानीय चौरड़िया प्रशाल में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि प्रमाद और अप्रमाद के दो मार्ग है, जो व्यक्ति बिना सोचे विचार यदि प्रमाद का मार्ग ले लेता है तो वह मार्ग ऐसी जगह ले जाता है कि व्यक्ति को कठिनाई में डाल देता है। बाहर के मार्गों का पता लगाना आवश्यक होता है, आदमी को पूछते रहना चाहिए पूछने से जानकारी प्राप्त होती है। हम जीवन के लिए सम्यक मार्ग का चयन करें, प्रमाद का मार्ग गलत है वह दु:खों को बढाने वाला होता है अप्रमाद का मार्ग परम सुख देने वाला होता ह, भोग एक प्रमाद का मार्ग है और संयम अप्रमाद का मार्ग है, सामान्यत: आदमी को परिणाम पर ध्यान देना चाहिए। दीर्घ को देखें तात्कालिक अल्पकालिक को न देखें।

प्रवचन के पश्चात आचार्यश्री महाश्रमण ने 'मैं तिरूं म्हारी नांव तिरै' आचार्य तुलसी द्वारा रचित व्याख्यान का वाचन किया, इस वाचन से यह प्रेरणा मिलती है कि जिसके जीवन में प्रमाद आ जाता है और प्रमाद को छोड़कर अपने जीवन की दिशा बदल देता है। आज इस व्याख्यान का समापन किया गया।

इस अवसर पर साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा रचित महाश्रमण अष्टकम का वाचन विभा नाहटा ने किया।

एनिग्मा ऑफ द युनिवर्स व प्रेक्षा मेडिटेशन ह्यूमन हेल्थ कृति का लोकार्पण

सरदारशहर 14 जून, 2010

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित एक विशिष्ट कार्यक्रम में प्रोफेसर मुनि महेन्द्र कुमार द्वारा लिखित एनिग्मा ऑफ द युनिवर्स पुस्तक एवं जे.पी.एन. मिश्रा की प्रेक्षा मेडिटेशन ह्यूमन हेल्थ का लोकार्पण आज (14 जून) चौरड़िया प्रशाल में निर्मित प्रवचन पण्डाल में किया गया। प्रोफेसर मुनि महेन्द्र कुमार विज्ञान और आध्यात्म के समन्वय पर विशेष शोध कर रहे हैं। उनके द्वारा लिखित पुस्तकें उनकी विद्वता और विषय की पकड़ को परिभाषित करती है। मुनि महेन्द्रकुमार अपनी नव प्रकाशित कृति एनिग्मा ऑफ न युनिवर्स की प्रथम प्रति आचार्य महाश्रमण को लोकार्पण हेतु समर्पित की। इस अवसर पर मुनि अभीजीतकुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किये। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा ने प्रेक्षा मेडिटेशन ह्यूमन हेल्थ के लोकार्पण हेतु आचार्यश्री महाश्रमण को भेंट की।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि साहित्य यदा-कदा उपहार में प्राप्त होता रहता है साहित्य जन भोग्य है जिसे सामान्य जनता पढ़ सके, वह विद्वतजन भोग्य होता है उसका अपना स्तर व अपना मूल्य होता है ऐसी पुस्तकें जो बौद्धिकजन के योग्य हो उसे लोग पढ़ते भी हैं, आदमी जितने गहरे में जाएगा उतना उसे विशेष ज्ञान प्राप्त होता है। उन्होंने उक्त कृति के संदर्भ में कहा यह एक ऐसी पुस्तक है जो बौद्धिक ज्ञान को प्राप्त कराने वाली है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने प्रो. मुनि महेन्द्र कुमार के कार्यों को सराहते हुए उन्हें विद्या रशिक उपासक बताया। इस कार्य में संलग्न मुनि अभिजीतकुमार को लक्ष्य बनाकर ज्ञान की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)